International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 1 || January 2024 || PP. 81-89

ऋग्वेद में नारी स्थिति का दार्शनिक विश्लेषण
(वेद मंत्रो की रचना के सन्दर्भ में)

Dr. Shailendra Kumar Singh
Assistant Professor
P.G. Department of Philosophy
Magadh University, Bodh-Gaya
Email-shalindraias@gamil.com

Cindrella Aanad
Research Scholar
P.G. Department of Philosophy
Magadh University, Bodh-Gaya
Email-cindrella0888@gmail.com

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

प्राचीन भारतीय इतिहास में स्त्रियों के गौरवमयी कीर्तिमान भरे पड़े हैं। हमारे पूर्वजों का कथन है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहां सभी देवता निवास करते हैं; यहाँ पूजा का अर्थ केवल उनकी मान मर्यादा की रक्षा तथा उनके अधिकारों की रक्षा से है। भारत में सदैव नारी को अत्यंत उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया है तथा उसे लक्ष्मी, देवी, साम्रज्ञी, महिषी आदि सम्मानसूचक नामों से अभिहित किया जाता रहा है।

"भारतीय सभ्यता का सर्वोत्कृष्ट प्राचीन काल वैदिक-संहिताकाल माना गया है। इस काल को यदि सम्पूर्ण संसार की सभ्यता का श्रेष्ठतम युग कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। हमारे पूर्वजों की मान्यता यह रही है कि जिस प्रकार प्रकृति के बिना पुरुष (परमात्मा) का कार्य अपूर्ण रहता है, ठीक उसी प्रकार नारी के बिना नर का जीवन भी अधूरा है। संहिता काल में इसी तथ्य को समझकर सामाजिक व्यवस्था की नींव रखी गयी थी। इस जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र है - एक नारी और दूसरा नर। इन दोनों चक्रो की बराबरी ही जीवन रूपी गाड़ी को सतत गतिशील रख सकती है। इसलिए वैदिक संहिताकाल में नारी को पुरुष की अर्धांगिनी कहा गया है। नारी की उपलब्धि के बिना नर का जीवन अधूरा है।"[1] इसी आधार पर वैदिक ग्रंथों में महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि जहाँ दृष्टा ऋषियों की प्रतिष्ठा है, वहीं मन्त्र दृष्टि ऋषिकाओं को भी गौरव प्राप्त है।[2]

ऋग्वेद के सम्बन्ध में अध्ययन द्वारा ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ पुरोहितों द्वारा लिखे गये हैं जिसमें दस मंडल और 1028 मन्त्र शामिल हैं, जिनमें से कुछ का योगदान ब्रह्मवादिनी नामक 27 महिलाओं द्वारा किया गया था।[3] अतः ऋग्वेद की ऋचाओं के आधार पर तत्कालीन नारी के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। यह भारतीय समाज के लिए गौरव की बात है कि उस समय की भारतीय नारी विदुषी के रूप में प्रख्यात हुई थी।[4]

अतः ''नारी-समाज को वेद मंत्रो के अध्ययन से विरत रखने वाला आज का पंडित चाहे जो तर्क दे, परन्तु वैदिक युग पुकार-पुकार के कह रहा है - वेद पढ़ने का स्त्री को समान अधिकार है। वेद के अध्ययन हेतु उपनयन के अधिकार से भी नारी वंचित न थी। नारी को यज्ञोपवीत के अधिकार के साथ साथ यज्ञ करने और कराने का भी अधिकार रहा है।''[5]

ऋग्वेद के मन्त्रों में 'योषित' शब्द का विश्लेषण 'यज्ञिया' के रूप में किया गया है, जिसका अर्थ है - यज्ञ की सभी विधियों का ज्ञाता यज्ञधिकारी।[5] इस प्रकार यह सिद्ध है की वैदिक सहिंताओ के अध्ययन-अध्यापन का द्वार सभी के लिए खुला था। यह अपने आप में एक उपलब्धि है। ऋग्वेद के कुछ प्रमुख मन्त्र द्रष्टा स्त्रियों का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है -

<u>प्रमुख मन्त्रद्रष्टा नारियों का जीवन वृत्त एवं कार्य:</u>

1.अदिति

अदिति एक प्रतिष्ठित हिन्दू देवमाता के रूप में जानी जाती हैं। ऋग्वेद- संहिता में ने मन्त्रद्रष्टओं की अपेक्षा 'अदिति' का उल्लेख अधिक है। ये शर्वशक्तिमान, सर्वग्राहिनी और स्वाधीन मानी गयी है।[6] 'अदिति' दक्ष प्रजापति की सबसे बड़ी पुत्री थी। पुराणों के आधार पर वे महर्षि कश्यप की पहली पत्नी थीं। इनके 12 पुत्र हुए जो 'आदित्य' कहलाये। जिसके संबंध में (4.18.7) में कहा गया है- " अष्टयोनिमिष्ट पुत्राम। ..... अष्टो पुत्रासों अदितेः॥।[7] संस्कृत शब्द अदिति का अर्थ होता है 'असीम'। अर्थात, जिसकी सिमा का कोई अंत नहीं है।

ऋग्वेद- संहिता में 'अदिति' की चर्चा सर्वाधिक है। मंत्रदृष्टि नारियों में अदिति ही एक ऐसी नारी है, जिसका लगभग ऋग्वेद में 80 बार नामोल्लेख हुआ है। ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के अठारहवें सूक्त की पांचवी, छठी एवं सातवीं ऋचाएँ अदिति द्वारा साक्षात्कृत है।[8] यहाँ अदिति इंद्र की माता के रूप में विख्यात है। अदिति ने अपनी तपस्चर्या के प्रभाव से ऋग्वेद के दशम मंडल के बहत्तरवें सूक्त के सम्पूर्ण नौ मन्त्रों का साक्षात्कार किया है। ''इस सूक्त के चतुर्थ, पंचम, अष्टम तथा नवम मन्त्र में ''अदिति'' नाम का भी उल्लेख है। इस सूक्त की ऋषि होने के कारण इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि इस सूक्त के मन्त्रों की द्रष्टा अदिति स्वयं है।''[9]

अदिति द्वारा दृष्ट ऋग्वेद के चतुर्थ मंडल के 18वें सूक्त के मन्त्रों से इंद्र द्वारा बद्ध किये गए वृतासुरों की अवांछनीय गतिविधियों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। इंद्र ने जन-कल्याण हेतु वृत्त नामक दैत्य द्वारा रोकी गयी नदियों को प्रवाहित किया और जन -द्वेषी वृतासुर को सदा के लिए समाप्त कर दिया। दशम मंडल के बहत्तरवें सूक्त में देवताओं की उत्पति का वर्णन किया गया है और अदिति द्वारा सात पुत्रों के साथ धुलोकगमन की चर्चा है। आठवें पुत्र सूर्य को आकाश में ही स्थिर रखने का औचित्य प्रतिपादित है। इसके अलावा वैदिक दर्शन में सात सप्तक हैं, जो सभी 'अदिति' के नाम से जाने जातें हैं। अतः यह स्पष्ट है कि अदिति प्रत्येक वैदिक सप्तक का नाम है। प्रत्येक सप्तक में विकसित होने वाला तत्व "अदितेभव: आदित्य" कहा जाता है। ऋग्वेद 1|89| 10में कहा गया है कि- "आकाश, अंतरिक्ष, माता, पिता, पुत्र, सम्पूर्ण देवता, सभी जातियाँ अर्थात जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है और भविष्य में उत्त्पन्न होगा, वह सभी अदिति का ही रूप है।"[10]

स्पष्ट है अदिति मन्त्रद्रष्टाओं में सबसे अधिक प्रतिष्ठित हैं। इन्हें संसार की उत्पत्ति का कारण के रूप में माना गया है।

2. अपाला

अपाला अत्रिमुनि के वंश में जन्मी थी। अपाला कुष्ट रोग से पीड़ित थी इसलिए उनके पति ने उन्हें अपने घर से निकल दिया था।[11] अन्तोत्गत्वा अपाला के पिता ने आंतरिक बोध से उसे अलौकिकित बनाने का निर्णय लिया। जिसके फलस्वरूप अपाला ब्रह्मवादिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

अपाला ने अपनी तपस्चर्या के प्रभाव से ऋग्वेद के आठवें मंडल के 19वें सूक्त की सम्पूर्ण ऋचाओं को दृषिगोचर किया था। ''इस सूक्त के 7वें मन्त्र में 'अपाला' के नाम का भी उल्लेख है। इसके अलावा अपाला द्वारा निर्मित सूक्त की पुष्टि वृहद्देवता (6| 11| 160), सायण-भाष्य (8| 19) और नीतिमञ्जरी (पृ. 278-81) से भी होती है।[12] जिससे अपाला के वैदुष्य का पता चलता है। आपला ने अपनी ऋचाओं के माधयम से इंद्र से स्तुति करती हैं और स्वयं को अपाला से सुपाला बनाने को कहती हैं। वह कहती हैं - "हे सोम! आप धीरे-धीरे प्रवाहित हों, जिससे पान करने में इंद्र को कष्ट न हो।"[13] जिससे प्रसन्न होकर इंद्र ने अपाला से वर मांगने को

कहा। अपाला ने वर मांगते हुए सर्प्रथम कहा मेरे पिता के खल्वाट सर पर बाल उग जाए, पिता के ऊसर खेत उपजाऊ हो जाए तथा मेरे शरीर से कुष्ट चिन्ह दूर हो जाये। इस प्रकार अपाला ने सोम रस के द्वारा इंद्र का आवाहन कर तीन वर का आग्रह किया और इंद्र ने "एवमस्तु" कहकर उनकी प्रार्थना को पूर्ण किया।

स्पष्ट है, अपाला के इस साधना से यह सिद्ध होता है कि वैदिक सहिंताकाल की नारियां पुरुष के पौरुष को भी चुनौती दे सकती हैं। ऋषि कुशाश्व ने आपला के वैदुष्य को समझने में गलती थी जिसके कारण बाद में उन्हें पश्चाताप करना पड़ा था। इसके अलावा अपाला ने अपने तप से अपने शरीर को तप्त सुवर्ण की भांति अपने पति को दिखाकर आश्चर्य किया था। अतः अपाला ने यह सिद्ध कर दिया कि वह अपने तप, त्याग और बलिदान से नर क्या नारायण को भी झुका सकती हैं।

3. घोषा

घोषा महर्षि कुक्षिवान की पुत्री थी। वह एक संयुक्त परिवार में पाली बढ़ीं। पिता और चाचा के देख-रेख में घोषा की जन्मजात प्रतिभा निखार उठी और उसने अपने बाल्यकाल से ही अच्छी-अच्छी विद्वद गोष्ठियों में सम्मान अर्जित किया। घोषा ने अपनी विद्वता से अपने पिता को भी पीछे छोड़ दिया। घोषा भी कुष्ठ रोग से पीड़ित थी,[14] किन्तु वह एक विदुषी स्त्री थी। इसके बावजूद उनका विवाह में दिक्क्त आ रही थी जिसके कारण उनके पिता दुखी रहते थे। अपने पिता को दुखी देखकर घोषा ने देवताओं के चिकित्सक अश्विनकुमार को प्रसन्न किया और कुष्ट्काया कंचनकया में बदल गयी और उनका विवाह हुआ। वैदिक-मन्त्रों का साक्षात्कार करने वाली 'घोषा' को ज्ञान की प्राप्ति अपनी पैतृक परम्परा से मिली थी। घोषा-शब्द अर्थविशेष का सूचक है, जिसे सर्वसामान्य नारी या नर चरितार्थ नहीं कर सकता, वैदिक संहिता के युग में वेद की प्रचारिका ब्रह्मचारिणी कन्या ही 'घोषा' इस नाम की अधिकरणी थी।[15]

ऋग्वेद के दशम मंडल के सूक्त 39 और 40 की सभी ऋचाएँ घोषा द्वारा प्रतिपादित हैं। दोनों सूक्तों में कुल 28 मन्त्र हैं, जिनमें कुमारी कन्याओं के लिए वेदाध्ययन से लेकर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने तक के समस्त कार्य सुचारु रूप से प्रतिपादित हैं। घोषा ने अपने द्वारा दृष्ट सूक्तों में घोषा ने अश्विनकुमार से विविध प्रकार की प्रार्थनाएँ की हैं। कुछ मन्त्र सार्वजानिक हितों को ध्यान में रखकर कहा गया है - "हे देव! आप दोनों हमें मधुर बोलने की प्रेरणा दें और हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण करें। हम आपकी उपसिकाएँ आपसे मुख्य रूप से तीन बातों की कामना करती हैं - 1. सच्चे और मधुर वचन की, 2. कर्म की पूर्णता तथा 3. विविध प्रकार की बुद्धि की।"[16] स्पष्ट है, यहाँ आपला ने सभी स्त्रियों के हितों को ध्यान रखते हुए प्रार्थना करती है, वह चाहती है कि सभी उपसिकाएँ विविध प्रकार की बुद्धि, सच्चे और मधुर वचन तथा कर्म की पूर्णता वाली हो।

ऋग्वेद के (17|39) के पांचवें मन्त्र में घोषा कहती हैं - "हे अश्विनकुमारों! मैं आपकी पुरानी वीरगाथाओं को समाज के समाने प्रस्तुत करती हूँ। आप अत्यंत ही सुयोग्य चिकित्सक हैं और सभी को सुख पहुँचाने वाले हैं। हे सत्यरूप! हमें ऐसे उपाय बताइये जिससे हमारे विरोधी भी हमारे प्रति श्रद्धावान हो जायें।"[17] इस मन्त्र के द्वारा अपाला ने अश्विनकुमार को एक सुयोग्य चिकित्सक के रूप में माना है और कहा है कि उनका कार्य सभी को सुख पहुँचाने वाला है। इसलिए वह कामना करती है कि ऐसा कोई उपाय उन्हें बताये जिससे उनके प्रति विरोधी भावना रखने वाला भी उनके प्रति श्रद्धावान हो जाये।

इसी प्रकार छठे मन्त्र में कहा गया है - "हे देवद्वय! आप हमारी प्रार्थना सुनें और हमें उसी प्रकार की शिक्षा दें, जिस प्रकार माता-पिता अपनी संतान को शिक्षा देते हैं। हम बुद्धिरहित, बन्धुरहित, असहाय हैं, अतः यदि हममें कोई विकृति उत्त्पन्न हो, तो उसे आप पहले ही नष्ट कर दें।"[17] यह मन्त्र यहाँ अत्यंत विचारणीय है। वह कहती है कि यदि उनमें कोई विकृति आ जाये तो उसे वह पहले ही नष्ट कर दें ताकि समस्या उत्पन्न

न हो। यहाँ अपाला ने विकृति उन्मूलन हेतु देवद्वय को माता-पिता से तुलना किया। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों में उपस्थित होने वाले प्रारंभिक दोषों को नष्ट कर देते हैं उसी प्रकार की अभिलाषा आपला ने देवद्वय से की है।

ऋग्वेद के मंडल 10|40 सूक्त के मन्त्रों में अपाला द्वारा ब्रह्मचारिणी कन्याओं के लिए प्रार्थना की गयी है। जिसमे उनेक द्वारा मन्त्र 4 और 5 में एक सद्गृह की मनोकामना का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। वह कहतीं हैं - "हे नायक अश्विनकुमारों! जिस प्रकार शिकारी बड़े-बड़े सिंहों का मृगया में पता लगाते हैं, वैसे ही हम ब्रह्मचारिणी कन्याएँ भी रात-दिन प्रेम-पूरित हविष्य द्वारा आपका आह्वान करती हैं।"[18]

आगे आश्विन कुमारों से प्रार्थन करते हुए घोषा कहती है -"जब भी कभी कोई ब्रह्मवादिनी ब्रह्मचारिणी नारी लक्षणों से समपन्न होकर कामनीय वर की इच्छा करे, उसे उसकी मनोदशा के अनुकूल वर मिले। पति के घर, वधु को जीवन के सभी साधन सुलभ रहे और सदा उस गृह में दया, परोपकार, उदारता और शालीनता आदि गुण नदी के प्रवाह की तरह गतिशील बने रहें।"[18] इस सूक्त के माध्यम से अपाला ने नारी गुणों के साथ-साथ नर के गुणों की भी चर्चा की है। उनेक अनुसार, श्रेष्ठ नर वही है जो अपनी पत्नी की रक्षा करने में सक्षम होता है। अतः यहाँ स्पष्ट है कि अपाला ने इन सूक्तों के माध्यम से पति-पत्नी की रिश्ते की प्रगढ़ता को दर्शाते हुए सोम रस की तरह पति प्रेम की कल्पना की है तथा उन्होंने अपने प्रार्थना में कहती है- जिस प्रकार सोम रास का पान करने से मनुष्य की इच्छा अन्यंत्र नहीं होती ठीक उसी पक्रार विवाहोपरांत पति अपनी पत्नी को छोड़कर किसी अन्य स्त्री में रूचि न ले। यहाँ, घोषा ने पति-पत्नी के रिश्ते की महत्ता और मर्यादा का बोध कराया है। उनके कथनानुसार पुरुष को अपनी पत्नी के प्रति अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए।

4. जुहू

वैदिक संहिताओं के सूक्त-मन्त्रों का दर्शन और मनन करने वाली नारियों में जुहू का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। जुहू नामक ब्रह्मवादिनी ऋषिका का ऋषित्व ऋग्वेद के एक सूक्त 10.109 में दृष्टिगोचर होता है।[19] जुहू को एक ब्रह्मज्ञानी की पत्नी होने के कारण 'जुहू' की प्रसिद्धि ब्रह्मजाय के रूप में रही है। उनके मन्त्र हैं -

"असो वै जुहू" (तै. ब्राह्मण), "तस्यासावेव धौजूहुः" (शत. ब्राह्मण-1,3,2,4), "आग्नेयी वै जुहूः" (तै. ब्राह्मण-3,6,7,6) ।"[20]

जुहू द्वारा दृष्ट ऋग्वेदीय दशम मंडलीय 109वें सूक्त क सारगर्भित सन्देश इस प्रकार है - "यह मनुष्य जाति महान कौतुकशालिनी है और ईश्वर की महिमा प्रकट करने वाली है। ईश्वर की सत्ता को मानाने वाली यह मानव जाति जब कभी भौतिकतावादी की चकाचौंध में चक्कर खा जाती है, तो ईश्वर को भुला बैठती है। धर्म-कर्म को भूलने वाली इस मानव जाती को जब कभी ऐसी दशा हो जाये, उस समय सभी विद्वान को एक स्थान पर एकत्रित होकर सत्य का अन्वेषण करना चाहिए।"[20]

जुहू द्वारा द्रष्ट इन मन्त्रों द्वारा यह कहा जा सकता है कि उनका जीवन तपश्याचार्य से भरा रह होगा। जुहू को उनके पति बृहस्पति ने किसी कारण से उनका परित्याग कर दिया था। इसके उपरांत जुहू ने वैदिक-संहिताओं के अध्ययन अध्यापन से अपने को व्यस्त रखकर नारी के गौरव को बनाये रखा। जुहू के धैर्य और साहस को देखकर पुरे देव समाज ने बृहस्पति को पत्नी के परित्याग हेतु पश्चाताप का आदेश दिया। इसके उपरांत उन्होंने अपनी ब्रह्मज्या को ग्रहण किया। अतः जुहू ने कर्म-त्याग करने वाले व्यक्ति से प्राश्चित कराने हेतु कैसे लोगो की आवश्यकता है इस बात पर प्रकाश डाला है। सभी देव समाज के निर्णायक मंडल ने नर और नारी पर बल दिया है। जिससे निर्णय निष्पक्ष हो सके।

स्पष्ट है, जुहू द्वारा दृष्ट इन सूक्तों की ऋचाएँ वर्तमान लोगों के लिए भी उतने ही प्रेरणादायक एवं निर्णायक मंडल चुनने में सहायक हैं, जितना वैदिक काल में थे।

5. रोमशा

बृहदेवता (3|156) के अनुसार रोमशा, राजा भावयव्य की सहधर्मिणी थी तथा रोमशा ने ऋग्वेद सहिंता के प्रथम मंडल 126वें सूक्त की 1 से 7 ऋचाओं का साक्षात्कार किया है।[21] ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 126वें सूक्त की 7वीं ऋचा में 'रोमशा' नाम का स्पष्ट संकेत है तथा जिसमें जितेंद्रिय, उद्यमी पुरुष के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गयी है; क्योंकि वह बुद्धि से काम लेते हैं। कहा गया है - "है पतिदेव! मुझे समीप आकर स्पर्श कीजिये। मुझे अलप-रोमवाली न समझिये। में गांधारी के सदृश रोमवाली हूँ और विविध अवयवों से पूर्ण हूँ। आप मेरे समस्त अंगों का निरिक्षण करें और मेरे गुण-अवगुण पर विचार करें। मेरे ये अंग और गुण समस्त गृह-कार्यों के लिए उपयगी हैं; क्योंकि इनसे किसी भी प्रकार की हानि की संभावना नहीं है।"[21]

उपरोक्त ऋचा के माध्यम से रोमशा ने बुद्धि पर बल देते हुए कहा है, जो मनुष्य बुद्धि को दृढ़ता के साथ अपनाये रहता है, उसके सभी अवगुण को दूर कर बुद्धि भी उसका सहयोगी सच्ची पत्नी के समान करती है।

ऋग्वेदीय सूक्त के 6ठवें मन्त्र में राजा भावयव्य द्वारा सहस्त्रों यज्ञ अनुष्ठानों द्वारा बुद्धिसाधिका रोमशा को प्राप्त करने के पश्चात कहते हैं - "मेरी पत्नी गृहस्वामिनी के रूप में मुझे सैकड़ों प्रकार के भोग्य-पदार्थ और ऐश्वर्य देती है। यह मेरी अत्यंत प्रिय सहधर्मिणी है।"[22]

रोमशा ने उन सभी बातों का प्रचार-प्रसार किया है, जिनसे स्त्रियों की बुद्धि का विकास होता है। जिनके सम्बन्ध में कहा गया है- वेदों और उनकी शाखाओं के अनुसार उसके तन पर बाल हैं और वे उस ज्ञान को फैलाती थी जिसे रोमशा कहा जाता है।[23]

अतः रोमशा के जीवनवृत के गहन अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि वैदिक युग में ऐसा भी आश्चर्य हुआ कि किसी पुरुष द्वारा एक बुद्धिजीवी स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्ति हेतु सहस्त्रों यज्ञ का अनुष्ठान किया गया हो। यह वृतांत वैदिक युग में स्त्री महत्ता को दर्शाती है।

5. लोपामुद्रा

लोपामुद्रा राजा विदर्भ की एकलौती पुत्री थी। ऋग्वेद में उन्हें "मंत्रद्रिका" (मंत्रों में पारंगत) कहा गया है।[24] इनका विवाह महर्षि अगस्त्य से हुआ था। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के 179वें सूक्त का साक्षात्कार करने वाली ऋषिका के रूप में लोपामुद्रा विख्यात हैं। इन्होने अपने सूक्तों के माध्यम से पति-पत्नी के आदर्श रूप का चित्रण किया है। उनके अनुसार गृहस्थ धर्म के निर्वाह में पति-पत्नी के अधिकारों को एक समान माना है तथा कहती हैं- जीवन को संयमशील रखते हुए, विद्याध्ययन में दम्पति को सदैव लगा रहना चाहिए।[15] साथ ही इनके सूक्तों में पितृ-ऋण से मुक्ति हेतु पुत्रोत्पत्ति की अनिवार्यता पर भी बल दिया गया है। जिसके सम्बन्ध में लोपामुद्रा से जब महर्षि अगस्त्य पूछते हैं कि -"तुम्हें अनेक पुत्रों की अभिलाषा है या किसी एक पुत्र की जो सर्वगुण संपन्न हो।" इसके उत्तर में लोपामुद्रा कहती है -"भगवन! मुझे एक ही गुणी पुत्र की आवश्यकता है। मैं हज़ार निकम्मे एवं मुर्ख पुत्रों को लेकर क्या करुँगी?"[25] अतः उन्हें दृढस्यु नामक पुत्र की प्राप्ति होती है जो बाद में बड़े ही विद्वान, चरित्रवान, कवि और तत्ववेत्ता सिद्ध हुए।

लोपामुद्रा के जीवनी के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि धनी परिवार से होते हुए भी बिना संकोच के वह एक वनवासी महर्षि अगस्त्य से विवाह किया। विवाह के उपरांत उन्होंने महर्षि के जैसा जीवन जीना शुरू कर दिया तथा राजसी वैभव का त्याग कर दिया। क्योंकि लोपामुद्रा का विश्वास था कि पितृ-परितोष संतान का प्रथम कर्तव्य है।

8. वागाम्भृणी

वागाम्भृणी ऋषि अम्भृणी की पराकर्मी पुत्री थी। वागाम्भृणी अम्भृणी ऋषि की पुत्री होने के कारण वागाम्भृणी कहा जाता है।[26] ये 8 मन्त्रों के साथ मंडल 10 सूक्त 125 में दिए गए देवी ऋक मन्त्रों की द्रष्टा हैं। ''वैदिक-वांग्मय में इस सूक्त को देवीसूक्त के नाम से भी जाना जाता है। इस सूक्त में वाक् की प्रसंशा की गयी है। आज सम्पूर्ण भारत में नवरात्र के दिनों में जो चंडी पाठ होता है, उसके मूल में यही सूक्त कारण है। चंडी पाठ के प्रचार-प्रसार से पूर्व इसी सूक्त की ऋचाओं का प्रचलन था। मार्कण्डेय-पुराण के चंडी-महात्मय-प्रकारण में वागाम्भृणी द्वारा दृष्ट इन मन्त्रों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। श्री शंकराचार्य जी को अपने अद्वैतवाद के सिद्धांत की प्रेरणा वागम्भृणी के सूक्तों से मिली थी।''[27] अतः यह स्पष्ट है कि अद्वैतवाद की मूल जननी वागम्भृणी ही हैं। इनके कारण ही शंकराचार्य को सम्बल प्रदान किया और वे पुनः सनातनधर्म की आधारशिला रख पाए।

उपरोक्त बातों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वागाम्भृणी ने अपने मन्त्रों के माध्यम से वाणी की महत्ता का साक्षात्कार किया है। उन्हें वाणी की देवी भी कहा जाता है। प्रस्तुत सूक्त के पांचवें मन्त्र में वागम्भृणी को इतना सहक्तिशाली बताया गया है कि उनकी कृपा से ही मानव बलवान, मेधावी और स्तोता या कवी हो सकता है।[27] ऐसा प्रतीत होता है कि वागाम्भृणी ने अपनी वाणी के बल से सभी को प्रभुत कर दिया था, साथ ही अपने अद्वैतवादी सिद्धांतों से द्वैतवाद के सिद्धांतों को पराजित किया।

9. विश्ववारा

वैदिक ऋषिकाओं में विश्वारा आत्रेयी का नाम प्रख्यात है। ऋग्वेद का सूक्त 5.28 इन्हीं के द्वारा दृष्ट है, जिसमें उनके द्वारा अग्निदेव की स्तुति की गई है।[28] विश्वरा महर्षि अत्रि की पुत्री के रूप में जाना जाता है। विश्वरा एक मेधावी कन्या थी तथा इनकी अत्यधिक रूचि वेद अध्ययन में थी। विश्ववारा ने स्वयं यज्ञ किये और दूसरों को भी वैसा करने का उपदेश दिया।

''ऋग्वेद-सहिंता के पंचम मण्डल के द्वितीय अनुवाक के 28वें सूक्त की द्रष्टि 'विश्ववारा' है। इस सूक्त में छः ऋचाएँ हैं, जो एक से एक बढ़कर साहित्यिक छटा का प्रदर्शन करती है। अग्निदेव की स्तुति में प्रतिपादित इस सूक्त की अनेक विशेषताएं है। इस सूक्त के प्रथम मन्त्र में मन्त्रद्रष्टि विश्ववारा का उल्लेख है। उन्होंने इस मन्त्र के माध्यम से प्रज्वलित अग्निदेव के उस उज्जवल तेज़ का वर्णन किया है, जो आकाश तक अपनी ज्वाला फैलता है। देवार्चना में विश्ववारा को विद्वानों का सत्कार करते हुए दिखया गया है तथा इस सूतक के तृतीय मन्त्र में उन्होंने स्त्री-पुरुष के दाम्पत्य सम्बन्ध को सुदृढ़ करने की कामना की है।''[29]

स्पष्ट है, विश्वारा ने वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा यज्ञ करने और करने का उपदेश दिया है। उन्होंने अपने सूक्तों के माध्यम से समाज को अतिथि सत्कार, यज्ञ की विधि तथा पति पत्नी के संबंधों पर विशेष ज्ञान प्रदान किया है।

10.शाश्वती

शाश्वती ऋषिका अंगिरा ऋषि की पुत्री एवं आसडंग नामक यदुवंशी राजा की पत्नी थी। ऋषिका शाश्वती पति-पत्नी के सुचारु सम्बन्ध की व्याख्याता मानी जाती है। शाश्वती ने नारी को बुद्धि का प्रतिक एवं पुरुष को आत्मा का प्रतिक माना है। उनके कथनानुसार, ''बुद्धि से ही आत्मा की शोभा होती है। बुद्धि की शुद्धता पर ही आत्मा की शुद्धि और पवित्रता निर्भर है। बुद्धि और आत्मा का पारस्परिक सहयोग जिस प्रकार आवश्यक है, उसी प्रकार पति और पत्नी का मेल मिलाप भी समाज में आवश्यक है।''[30]

"ऋग्वेद के आठवें मण्डल के प्रथम सूक्त की 34वीं ऋचा की द्रष्टा ब्रह्मवादिनी शाश्वती है। शाश्वती बुद्धि का पर्याय है। जो जीवात्मा के साथ शाश्वत रूप में स्थिर रहे, उस बुद्धि को शाश्वती कहा जाता है।"[30] इसी सूक्त की 33वीं ऋचा में "आसडंग" को एक महान दानदाता के रूप में वर्णित किया गया है और इसके साथ ही साथ उसके पिता "पलयोग" के नाम का भी उल्लेख है। आसडंग एवं उसके पिता पलयोग के नामोल्लेख से शाश्वती के पारिवारिक प्रसंग पर प्रकाश डालता है।

शाश्वती ने अपनी ऋचाओं से पति-पत्नी के समबन्धों को बुद्धि और आत्मा के दृष्टान्त से समझाया है। अपने पति को सम्बोधित करते हुए वह कहती हैं - "हे स्वामी! आप परम सौभाग्यशाली हैं; क्योंकि आपके पास शोभन-भोजन है। यह भोजन स्थिर है, इसका विनाश कभी नहीं हो सकता। इस भोजन के टुकड़े का झुकाव ईश्वराभिमुख है, इसलिए यह बहुत-सा दिखाई देता है।"[30]

स्पष्ट है, मन्त्र द्रष्टा शाश्वती पति-पत्नी के सुचारु संबंधों की व्याख्याता के रूप में प्रख्यात थी। उन्होंने पत्नी को बुद्धि और पति को आत्मा का प्रतिक माना है। क्योंकि उनका मानना था कि बुद्धि से ही आत्मा की शोभा बढ़ती है। उन्होंने अपने सूक्त के माध्यम से सन्देश दिया है, पति-पत्नी को अभेदवाद से इस संसार में रहना चाहिए। अतः आज के समाज को उनके सन्देश की महत्ता को समझने की जरुरत है जो पति -पत्नी के रिश्ते में भेदभाव की भावना रखते हैं।

11.सूर्या

सूर्य की पुत्री का नाम सूर्या है। इन्हें ऋग्वेद में देवी और ऋषिका भी कहा गया है। सूर्या ने दशम मंडल के 85वें सूक्त का साक्षत्कार किया था।[31] यह सूक्त प्रधान रूप से विवाह सम्बन्धी विवेचना करता है। इसमें 47 ऋचाएँ हैं, जिनके प्रभाव में सूर्य की पुत्री सूर्या के विवाह का वर्णन है। सूर्या का विवाह चन्द्रमा के साथ हुआ था। सूर्या ने अपनी मन्त्रद्रष्टाओं के माध्यम से उनके विवाह की महत्ता को दर्शाया है। ब्रह्मवादिनी सूर्या को वैदिक सहिंताओं के अंतर्गत विवाह-मन्त्र-प्रचारिका माना गया है। सूर्या ने विवाह के लिए उचित समय के प्रति स्पष्ट रूप से कहा है कि पति-पत्नी प्रौढ़ावस्था में नहीं होने चाहिए तथा पति-पत्नी सौमनस्यता से घर स्वर्ग बन सकता है। इसलिए दोनों के सामान अधिकार का प्रतिपादन किया है।

पाणिग्रहण करने के वास्तविक उदेश्य पर प्रकाश डालते हुए इस सूक्त के 36वें मन्त्र में कहा गया है - "हे कन्ये! तुझे सौभाग्यशाली बनाने के लिए मैं तेरे साथ विवाह करता हूँ, अर्थात तेरा पाणिग्रहण करता हूँ। इस घर की स्वामिनी बनकर तुम मेरे साथ वृद्धावस्था तक जीवन-यापन करना। संतति हेतु भग, अर्यमा और पूषन देव ने तुमको मुझे प्रदान किया है।"[32]

इसी प्रकार सूक्त के 44वें मन्त्र में नारी से वीर-प्रसवा आदि गुणों से सुशोभित होने की कामना की गयी है। - "हे वधु! तुम अपने पति के लिए मंगलकारिणी, शुभ-दर्शनी एवं घर के पशु आदि को सतकर्ता से

देखने वाली बनो। सौंदर्ययुक्त होकर सदा प्रसन्न मन से ईश्वर की उपासिका तथा वीर-पुत्र की जननी बनने का गौरव प्राप्त करो।"[33]

सूर्या के जीवन और उसके कार्यों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उन्होंने सनातन- परम्परा के पाणिग्रहण-संस्कार पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। साथ ही उन्होंने उचित आयु में विवाह करने का उपदेश दिया है तथा पति-पत्नी को सामान अधिकार में प्रतिपादित किया है।

उपरोक्त ऋषिकाओं के ज्ञान के आधार पर यह कह सकते हैं, कि वे विदुषी तथा प्रतिभासम्पन्न थी, लेखिका और पत्नी भी थी। ऋषिकाओं के जीवन में इतने संघर्ष होने के बावजूद उनमें अध्भुत क्षमता थी। अपने अनेक कष्टों और रोगों से ग्रस्त होने के बावजूद कभी न हार मानी न निराश हुई। संघर्ष को उन्होंने अपने जीवन का धर्म मान लिया था। अपने लक्ष्य से वे चट्टान की तरह अडिग रहती थी। उन्होंने जन-कल्याण के कार्य से कभी विमुख नहीं हुईं। दान देती, अच्छे कार्य करने की प्ररेणा देती, ऐशवर्य प्राप्त होने का आशीर्वाद देती। ऐसी महान ऋषिकाओं को नमन है। ऐसी भारतीय विदुषियों के होने का प्रमाण हमारे वैदिक सभ्यता की गरिमा को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त आलेख में निष्कर्ष के रूप में मैं यह कहना चाहूंगी कि वर्तमान परिपेक्ष्य से कहीं बेहतर स्थिति वैदिककालीन स्त्रियों की थी। जिसका अंदाजा वेदों में वर्णित मन्त्रद्रष्टा नारियों के जीवन और उनके कार्यों के द्वारा लगाया जा सकता है। उन्हें शिक्षा, स्त्री-पुरुष समानता का अधिकार प्राप्त था। उन्हें अपनी बातों, विचारों को प्रकट करने के लिए सोचना नहीं पड़ता था। यही वजह है की वह ऋग्वेद-संहिता का अंश बन पायी।

ऋग्वेद -संहिता में सर्वधिक चर्चा अदिति का किया गया है। यह इस बात का धोतक है कि वह एक अत्यंत ज्ञानी और गुनी स्त्री थी। वहीं अपाला को ब्रह्मवादिनी के नाम से प्रसिद्ध दर्शया गया है। अपाला ने अपने तप से पौरुष्य को चुनौती तक दे दिया। उन्होंने अपने तप से अपने शरीर को तप्त सुवर्ण की भांति दिखाकर अपने पति को आश्चर्य कर दिया था। इस प्रकार यह साबित किया कि स्त्री चाहे तो नर क्या नारायण को भी झुका सकती है। घोषा को ज्ञान प्राप्ति अपनी पैतृक परम्परा से प्राप्त हुई थी। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि स्त्रियों को शिक्षा का पूर्ण अधिकार था। पुरुषों की भांति वे भी वेदों का अध्ययन करती थी। ऋग्वेद में सभी मन्त्रद्रष्टाओं का मंत्र साक्षात्कार उनकी शिक्षा में पूर्ण भागीदारी को दर्शाती है। वेद ने स्त्री-पुरुषों को एक समान स्थान प्रदान किया है। उपरोक्त मन्त्रद्रष्टा स्त्रियों में घोषा, जुहू, लोपामुद्रा, शाश्वती सूर्य ने अपने मन्त्रों में सर्वधिक रूप से स्त्री-पुरुष संबंधों पर बल दिया है या यूँ भी कह सकते हैं कि उनके ज्यादातर मन्त्र स्त्री-पुरुष संबंधों पर केंद्रित है। पाणिग्रहण-संस्कार ऐसा विधान है जिसमें पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक होते हैं। अतः इस बंधन को दोनों को एक सामान आदर्शों के अनुरूप निभाना होता है। दक्षिणा अपने मन्त्रों से दान की महत्ता और उसके प्रतिफल को समझती है। वागम्भृणी को वाणी के देवी के रूप में जाना जाता है।

अतः उपरोक्त मन्त्रद्रष्टाओं ने अपने ज्ञान और अनुभव से इतिहास रचा है। यह भारतीय स्त्रियों के लिए बहुत गर्व की बात है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि आज के वर्त्तमान समय में इनकी छवि और इनकी महानतम कृत्य को क्यों धूमिल कर दिया गया है। हमारा वैदिककालीन सभ्यता स्त्रियों के लिए उन्नत था। किन्तु धीरे-धीरे उत्तर वैदिक काल से स्त्रियों की स्थिति खराब होती गयी। आलम यह है कि आज भी स्त्रियां अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। यह भारतीय समाजिक व्यवस्था में स्त्रियों के सम्बन्ध में एक गंभीर विषय है। जिस देश का प्रारम्भ उन्नत सामाजिक व्यवस्था से हुई हो जहाँ स्त्रियों को पूजनीय माना गया हो। उसी समाज में आज स्त्रियों को हिन् दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें समाज में दोयम दर्जा दिया जाता है। वही

समाज स्त्री को उसके सभी अधिकारों से वंचित कर देता है। अंत में, मैं यही कहना चाहूंगी कि, क्या हमारा समाज शास्त्रों से परे है अथवा अनुरूप है? इस सम्बन्ध में पुनर्विचार की आवश्यकता प्रतीत होती है।

सन्दर्भ-सूची

[1]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990), वैदिक संहिताओं में नारी, डॉ. हरिश्चंद्र मणि त्रिपाठी, प्रकाशन अधिकारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, p. 112

[2]. सिंह, वी. एन. सिंह, जन्मेजय, (2013), नारीवाद, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, p. 37

[3]. Shah, Awdesh Kumar,(2023), Position of women in the Rig Vedic Period, Anthropo- Indialogs Vo. 3, No. 1, p. 01

[4]. झा, डॉ कीर्ति, (2015), नारीवाद का दार्शनिक विश्लेषण, कला प्रकाशक, वाराणसी, p. 15

[5]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990), -वही- ; p. 113

[6]. पाठक, डॉ. श्याम बिहारी, (2010), प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, कला कम्प्यूटर मिडिया, वाराणसी, p. 37

[7]. झा, डॉ कीर्ति, (2015), -वही- ; p. 16

[8]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990), -वही- ; p.118

[9]. -वही-; p. 114

[10]. -वही-; p. 116

[11]. सिंह, वी. एन. सिंह, जन्मेजय, (2013), -वही-; p. 38

[12]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990), -वही- ; p.122

[13]. -वही-; p.124

[14]. सिंह, वी. एन. सिंह, जन्मेजय, (2013), -वही-; p. 39

[15]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; p.124

[16]. -वही-; p.125

[17]. -वही-; p.126

[18]. -वही-; p.127

[19]. झा, डॉ कीर्ति, (2015),-वही- ; p.16

[20]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; pp.128,129

[21]. -वही-; p.132

[22]. -वही-; p.133

[23]. Kalyan Magzine, Nari Anka- Brahmwadini Romsha, Gita Press, Gorakhpur, p.358

[24]. Jain, lakshami (2008), Dropout of Girl Child in Schools, Northern Book Centre, p. 11

[25]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; p.135

[26]. दुबे, डॉ. अर्चना कुमारी (2015), वैदिक ऋषिकाओं के मन्त्रों में निहित गूढ़ तत्वज्ञान, वेदविद्या। p.01

[27]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; p. 136

[28]. सिंह, वी. एन. सिंह, जन्मेजय, (2013), -वही-; p. 16

[29]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; p. 138

[30]. -वही-; p. 139

[31]. पाठक, डॉ. श्याम बिहारी, (2010), -वही-; p. 38

[32]. शर्मा, डॉ. मालती, (1990),-वही- ; p. 140

[33]. -वही-; p. 141